नीर और नारी

संदीपा
रुड़की
उत्तराखंड

नीर और नारी, (Water & Women) स्त्री और पानी, कैसा लगता है जब ये दो महत्वपूर्ण जीवन देने वाले शब्द साथ में आते हैं। कैसा लगता है, जब नीर की बात हो और नारी दिखाई देने लगे, नारी की चर्चा हो और नीर बह चले, यह रिश्ता हमने नहीं बनाया है वरन् प्रकृति ने, सृष्टि ने, विधाता ने इन रिश्तों को साथ में गूंथ दिया है। एक सी कहानी है, एक सा इतिहास है, एक सा वर्तमान है, एक सा भविष्य नजर आ रहा है। सिर पर नीर भरने से घर लेकर लाने और एक गिलास पानी देने तक उसी स्त्री से जुड़ा है। जल का रिश्ता तथा पानी से जुड़ी हर जिम्मेदारी पनिहारिन से लेकर घर की हर प्रमुख महिला के हिस्से में आई है।

दृश्य हर घर, हर गांव, हर शहर का अलग हो सकता है लेकिन चिंता एक है, जद्दोजहद एक है, संघर्ष एक है, पानी पीने से लेकर बर्तने तक, उपयोग से लेकर सदुपयोग तक पानी कहां से बचेगा, पानी कहां कितना बटेगा, हर स्त्री की जुबान पर होता है यह हिसाब।

जल के लिए हर लड़ाई है, जल के लिए हर चढ़ाई है?

इस सीरीज का लोगो भी इसी बात का प्रतीक है कि जब तक पानी हमारे जीवन में है सब कुछ सुंदर है, ताजा तरीन है, हरा–भरा है, स्त्री का संसार में होना भी वैसा ही है पर हमारी लापरवाही और उदासीनता के कारण पानी और स्त्री दोनों अपने मूल स्वरूप खो रहे हैं। इन्हें सहेजा जाना है, बचाना है, कद्र करनी है, कीमत समझनी है, सम्मान करना है... नहीं तो दोनों हमारे जीवन से बह जाएंगे और हमारे पास बचेगा नीरस, शुष्क और रंगहीन जीवन। यही हमारा प्रतिनिधि प्रतीक चित्र कहता है।

जल है क्या ?

जल, प्रकृति की वह आश्चर्यजनक नेमत है जो हर सूखे कंठ की प्यास बुझाती है, शरीर और घर की हर वस्तु की सफाई से शरीर के भीतर के तापमान नियंत्रण तक तथा पाचन से लेकर उत्सर्जन तक। पृथ्वी का जहां 3 चौथाई भाग (लगभग 71%) जल से ढका है वहीं मानव शरीर का लगभग 70% भाग जल से बना है। जीव, जंतु, जानवर, पौधे, कृषि, बिजली, कागज, अन्य संयंत्र, उर्वरक सभी को जल की जरूरत है। जल सबकी आधारभूत आवश्यकता है और स्वच्छ पेयजल हर लोकतांत्रिक देश की जनता का अधिकार है।

पृथ्वी पर जल हमें जिस जल चक्र से मिलता है ऐसा ही जीवन चक्र एक स्त्री के जीवन में घटित होता है। कैसे आता है हम तक जल? आइए आप भी शामिल हो जाइए ''जल'' पर ''ज्वलंत'' सवालों के ''जवाब'' तलाशने के लिए। इस महाअभियान में जो जरूरी है कल के लिए, आइए जुटते हैं इस महिला दिवस पर जल के लिए.....

जन, जीवन, जल, जंगल, जमीन के साथ अब जननी को जोड़ना जरूरी हो गया है। एक स्त्री ही पानी की समस्या को बेहतर ढंग से समझ सकती है और वही निराकरण की दिशा में सार्थक पहल कर सकती है। पर स्त्री क्यों? इस सवाल का जवाब हमें अपनी नजर और नजरिए में बदलाव लाकर मिल सकता है।

खुली आँखों से और गंभीरता से मनन करेंगे तो पाएंगे कि संवेदनशीलता के स्वर पर एक स्त्री ही पानी के उपयोग, सदुपयोग और दुरूपयोग का बेहतर विश्लेषण कर सकती है। वही स्त्री जो हमारे आपके घरों में पानी को एकत्र करने से लेकर उसे बचाने और उसका पुनः इस्तेमाल करने की कवायद में हैरान हो रही है। वही स्त्री जो पानी की बूंद–बूंद को सहेजने में हजारों बूंद पसीना बहाती रहती है।

सृष्टि का संचालन बहुत से तत्वों पर निर्भर है लेकिन जीवन के लिए जिन दो तत्वों की जरूरत सबसे ज्यादा है वह हैः 'जल' और 'जननी'। इंसान खाने के बिना जीवित रह सकता है लेकिन जल के बिना नहीं। उसी तरह अगर जननी यानी स्त्री, औरत, महिला, नारी ही नहीं होगी तो जीवन कैसे धरा पर आएगा?

यह आवश्यक नहीं कि जल और जननी या स्त्री दोनों की प्रकृति और नियति हमेशा एक सी हो लेकिन दोनों को

एक दूसरे के सहयोग से बचाया जा सकता है। 8 मार्च को महिला दिवस के अवसर पर वेब दुनिया ने अपनी विषय वस्तु ''Water & Women'' द्वारा 'पानी की समस्या को महिला से जोड़कर हर उस मुद्दे पर अपनी बात रखी है जो ''जीवन और जननी'' के लिए जरूरी है। नीर और नारी का संबंध सदियों पुराना है। ग्रामीण स्तर पर पनघट, कुँओं और नदियों से जल भरकर घर तक लाने वाली स्त्रियां है वहीं शहर में भी एक गिलास पीने का शुद्ध पानी जुटाने के लिए संघर्षरत है महिला .....। पानी की जरूरत को लेकर एक स्त्री क्या सोचती है, क्या करती है, कैसे समस्या से निपटती है, कैसे बूंद–बूंद सहेजती है, कितना बच–बच कर बहाती है लेकिन वास्तव में कितना बचा पाती है.....। हमने इस समस्या को 'लोकल से ग्लोबल' परिवेश की मौजूदा स्थिति पर नजर डालकर समेटा है। पानी क्या है? कहां से आया? कहां जाएगा? क्यों है कमी, कैसे करें पूरी, जल के लिए स्त्री क्यों है जरूरी? क्या पानी भरने से लेकर हाथ में देने तक की जिम्मेदारी बस स्त्री की है, गांव से लेकर महानगर तक पानी की क्या है परेशानी, पानी का इतिहास स्त्रोत नदी से लेकर बोतल तक हर बात की पड़ताल, पानी और भारतीय स्त्री का मिलता जुलता इतिहास/पानी को लेकर विदेशों में क्या है स्थिति, पानी और परंपराएं, पानी को समर्पित तीज–त्योहार से लेकर जल सहेजने की आदिवासी परंपराओं तक, हमने बात की है। हर सवाल पर.....।

पानी को लेकर गांव से लेकर महानगर तक क्या कहते हैं आंकड़े/तथ्यात्मक रिपोर्ट, जल संकट से जूझ रहे इलाकों से ग्राऊंड स्टोरी, भावनात्मक आंकलन, वैचारिक आंदोलन, मंथन, साक्षात्कार, जल के लिए समर्पित हस्तियों से मुलाकात/ग्रामीण से लेकर शहरी इलाकों में पानी को लेकर क्या सोचती है महिलाएं और कैसा है उनका संघर्ष, क्या बच्चों को दिए जा रहे हैं पानी सहेजने के संस्कार? इस विशेष सीख को आत्मबोध करते समय महसूस हुआ कि अब भी वक्त है, संभल जाइए वरना बूंद–बूंद और बेटी–बेटी को तरसेंगे हम .....।